मार्च: 2023

वर्ष : 6 अंक : 6

# सिफरी मासिक समाचार

# नील क्रांति की ओर अग्रसर

## निदेशक की कलम से

"हर महिला की सफलता दूसरे के लिए प्रेरणा होनी चाहिए। जब हम एक दूसरे को खुश करते हैं तो हम सबसे मजबूत होते हैं – सेरेना विलियम्स

संस्थान के मासिक न्यूज़लेटर का मार्च 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। मार्च का महीना अंतर्राष्ट्रीय तौर पर और हमारे संस्थान दोनों के लिए एक विशेष महत्व रखता है।

एक तरफ सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की धूमधाम में व्यस्त होता है तो दूसरी ओर हमारा संस्थान अपने स्थापना दिवस संबंधी कार्यों से जुड़ जाता है। इस वर्ष हमारा संस्थान अपना 77वाँ स्थापना दिवस मनाने जा रहा है जिसके अंतर्गत कई प्रकार की महत्वपूर्ण रूपरेखाओं को प्रतिरूप देने का प्रयास रहेगा। इनमें प्रमुख है - हमारे वैज्ञानिकों के साथ किसानों और उद्यमियों के साथ पारस्परिक संवाद जहां किसान और उद्यमी अपने विचारों और समस्याओं को रख सके और उनके समस्याओं का निवारण आदि किया जा सके। इससे मात्स्यिकी में सुधार के साथ उनके आय वृद्धि में भी मदद मिलेगी। इसके साथ हमारी भावी पीढ़ी अर्थात स्कूली छात्र-छात्राओं को भी बुलाया जाएगा जिससे वो देश की एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र अर्थात मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त कर सके। इससे उनके ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उन्हे स्वयं के भविष्य निर्माण में भी सहायता होगी। इस अंक में फरवरी माह की गतिविधियों को दिखाया गया है। आप सभी को संस्थान के 77वाँ स्थापना दिवस तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई। क्योंकि कहा जाता है कि, "मातृत्व से लेकर पत्नी, बहन और अंत में बेटी तक जीवन के हर पड़ाव में महिलाओं के सहयोग के बिना इस जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है।"

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

# पहाड़ी क्षेत्रों में सजावटी मछली पालन का प्रदर्शन और हितधारकों को परामर्श कार्यक्रम

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने हेमनगर सुंदरबन ड्रीम्स और रोटरी रॉयल भुवनेश्वर के सहयोग से अनुसूचित जन जाति उपयोजना और टीएसपी कार्यक्रम के तहत 5 से 6 फरवरी, 2023 के दौरान पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के पहाड़ी क्षेत्रों के 3 स्थानों पर दो दिवसीय हितधारक परामर्श सह जन जागरूकता और सजावटी मछली पालन लाइव प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया।

5 फरवरी 2023 को सुखिया ब्लॉक में लाइव प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसमें 4 गांवों के कुल 32 महिलाएं और 18 पुरुष सहित अनुसूचित जाति समुदाय के 50 लाभार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और लाभार्थियों को लाइव प्रदर्शन के साथ इनपुट वितरित किए गए। जन जागरूकता कार्यक्रम के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने कार्यक्रम के उद्देश्यों की रूपरेखा दी , जो ग्रामीण समुदाय को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगा और ग्रामीण कुटीर उद्यम के रूप में सजावटी मछली पालन को आत्म-निर्भर बनाएगा, जो माननीय प्रधान मंत्री का एक प्रमुख कार्यक्रम के अंतर्गत आता है। जीटीए के सदस्य श्री अंजुल चव्हाण ने पहाड़ी मत्स्य पालन के विकास के लिए आईसीएआर-सिफरी द्वारा की गई पहल की सराहना की और कार्यक्रम की प्रक्रिया के दौरान सभी प्रकार की सहायता प्रदान की।

सुंदरमन ड्रीम्स के समन्वयक श्री मुस्तफा ने कार्यक्रम का समन्वय किया और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और ग्रामीणों की आजीविका बढ़ाने के लिए इस प्रकार की गतिविधि का समर्थन करने के लिए एनजीओ की भागीदारी की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किया। डॉ. श्रेया भट्टाचार्य, आरए ने मछली पालन और उनके दैनिक उपयोग के लिए संस्थान द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रक्रियाओं और इनपुट की स्थापना की व्याख्या करते हुए एक लाइव प्रदर्शन दिया। अंत में व्यक्तियों को एचडीपीई टैंक और सजावटी मछली, मछली फ़ीड और दवा सहित सहायक उपकरण वितरित किए गए। इस अवसर पर जीटीए के मत्स्य विशेषज्ञ और अधिकारी उपस्थित थे। दोपहर में इसी तरह का कार्यक्रम मिरिक अनुमंडल में आयोजित किया गया, जिसमें अनुसूचित जाति समुदाय के 6 गांवों के 40 लाभार्थी शामिल हुए, जिसमें प्रबंधक मंजू टी एस्टेट और सुंदरबन ड्रीम्स के पदाधिकारी मौजूद थे और साथ ही जन जागरूकता सह सजीव प्रदर्शन भी किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास की उपस्थिति में 28 महिला और 12 पुरुष लाभार्थियों को इनपुट वितरित किए गए। इस स्थान पर प्रशिक्षण और प्रदर्शन लाभार्थियों के लिए घर के पीछे में सजावटी मछली पालन इकाई स्थापित करके किया गया।

6 फरवरी 2023 को शिटोंग, खासमहल के 6 गांवों के 20 पुरुष और 10 महिलाओं (आदिवासी लाभार्थी) के लिए हितधारक परामर्श सह लाइव प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम उसी तरह आयोजित किया गया जैसे 5 फरवरी को किया गया था। लाभार्थियों को सजावटी खेती के विभिन्न पहलुओं के बारे में संवेदनशील बनाया गया और मछली की बिक्री और विकास के बारे में उनके मन के सवाल और संदेह को दूर किया गया। मत्स्य पालकों को सर्दियों के दौरान मछली पालन प्रथाओं का अधिक से अधिक ध्यान रखने के लिए सुझाव दिया गया।

मत्स्य पालन के दौरान लाभार्थियों को सलाह देने के लिए विशेषज्ञों, हितधारकों और आपूर्तिकर्ताओं को साथ लेकर तीन व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए। सजावटी मछली निर्यातक और आपूर्तिकर्ता श्री कृपान सरकार और श्री राबिन मयूर भी लाभार्थियों को जागरूक करने के लिए उपस्थित थे।

सजावटी मछली पालन पर आईसीएआर-सिफरी का यूट्यूब वीडियो और सजावटी मछली पालन संबंधी पुस्तक की सॉफ्ट कॉपी भी लाभार्थियों को दी गई और व्हाट्सएप ग्रुप में प्रसारित की गई। 4 प्रकार की सजावटी मछलियाँ विशेष रूप से जीवित वाहक जैसे गप्पी, मौली, प्लेटी और स्वॉर्ड टेल का वितरण लाभार्थियों में किया गया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के स्थायी आर्थिक उन्नयन के लिए पहाड़ी क्षेत्र में लाभार्थियों को सजावटी मछली पालन प्रदान करने का यह पहला प्रयास था।

# मछली पकड़ने के उपकरणों के वितरण के माध्यम से जनजातीय मछुआरों को सक्षम बनाना

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर ने पहले से वितरित एफआरपी नौकाओं के लिए आउटबोर्ड इंजनों का वितरण उनकी आजीविका में सुधार के लिये अनुसूचित जनजाति (एसटी) समुदायों से संबंधित मछुआरा सहकारी समितियों के माध्यम से किया। रांची और सिमडेगा नामक दो जिलों में स्थित 5 जलाशयों के एसटी मछुआरों की सहकारी समितियों को आईसीएआर-सिफरी ने नौका के 5 इंजनों वितरित किया। इस तरह प्रत्येक समिति को एक-एक नौका इंजन प्राप्त हुआ। महेशपुर मत्स्यजीवनी सहयोग समिति लिमिटेड (गेतलसूद जलाशय, रांची), केउंडीह जलशय मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड (कंसजोर जलाशय, सिमडेगा), उत्तियेल मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड (रामरखा जलाशय, सिमडेगा), चिंदा/केलाघग जलाशय मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड (चिंदा/केलाघग जलाशय, सिमडेगा) और झारखंड के लारबा जलशय मत्स्यजीवी सहयोग समिति आदि लाभार्थी सोसायटियां हैं, दिनांक 06-07 फरवरी 2023 के दौरान क्रमशः गेतलसूद और केलाघग जलाशय में मोटरयुक्त एफआरपी नौकाओं का प्रदर्शन आयोजित किया गया। इससे उन्हें जलाशयों के बाड़े सिस्टम में मछली पकड़ने और मछली पालन गतिविधियों की निगरानी में मदद मिलेगी। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के समग्र मार्गदर्शन में किया गया था, और ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. अपर्णा रॉय, प्रभारी, एसटीसी और डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक द्वारा समन्वयित किया गया था। राज्य मत्स्य विभाग के जिला अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और सुविधा प्रदान की।

# बिहार के शिवहर जिले के मछुआरों को प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान और कौशल में वृद्धि

शिवहर जिला, बिहार के अन्तर्स्थलीय खुले पानी - चौर, मौन, नाले, नहरों और जलाशयों के संबंध में एक बहुत ही साधन संपन्न जिला है। प्रचुर मात्रा में जलीय संसाधन होने के बावजूद शिवहर में पर्याप्त मात्रा में मछली प्राप्त नही होती है। भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर में उत्पादन वृद्धि और आजीविका सुरक्षा के मिशन को ध्यान रखते हुऐ 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ज्ञान और कौशल के उन्नयन पर ध्यान देते हुए, "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 01 से 07 फरवरी, 2023 के दौरान शिवहर जिला के मछुआरों के लिये किया गया है। इस कार्यक्रम में कुल 30 सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. बि.के. दास, संस्थान के निदेशक ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन प्रणाली और प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों के ज्ञान आधारित कौशल विकास पर जोर दिया, जिससे उनकी स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि मछुआरों को वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोग प्राप्त करके इष्टतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाना होगा। किसानों को अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता के पहलुओं, फ़ीड और फीडिंग प्रोटोकॉल, सजावटी मछली पालन, मछलियों के प्रजनन पहलुओं, पोषण संबंधी आवश्यकताओं, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन पर इन-हाउस सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों से अवगत कराया

गया। आईसीएआर-सीफा कल्याणी में अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले ऑन-फील्ड प्रदर्शनों के अलावा खमारगाछी और बालागढ़, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू), में मछली पालन की विभिन्न गतिविधियों के आर्थिक पहलू, सजावटी मछली बाजार, मछली विपणन, प्रशासन पैटर्न आदि।से उन्हें अवगत कराया गया। संस्थान के बायो-फ्लॉक इकाइयों, सजावटी मछली हैचरी इकाई और फीड मिल में भी उन्हें प्रदर्शित किया गया। विभिन्न आवश्यकता पर आधारित पहलुओं जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों, मछली के खाद्य जीवों की पहचान, मछली रोग पहचान प्रोटोकॉल आदि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी उन्हें प्रदान किया गया। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपने ज्ञान के उन्नयन को स्वीकार करते हुए समग्र संतुष्टि के साथ चिह्नित किया, जो उनके भविष्य के प्रयासों में बहुत मददगार होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए. के. दास, प्रभारी, विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

# एनटीपीसी-सीएसआर योजना के तहत कार्प प्रजनन पर प्रशिक्षण सह फील्ड प्रदर्शन का आयोजन

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 8 से 10 फरवरी 2023 के दौरान आईसीएआर-सीआईएसएच-केवीके, मालदा के सहयोग से तीन दिवसीय "प्रशिक्षण सह फील्ड प्रदर्शन ऑन ब्रूड स्टॉक डेवलपमेंट एंड फिश ब्रीडिंग ऑफ कार्प्स" का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम आईसीएआर-सीआईएसएच, केवीके, मालदा के सहयोग से एनटीपीसी, फरक्का के वित्त पोषण समर्थन के तहत आयोजित किया गया था। "आजीविका में सुधार के लिए स्थानीय मछुआरों को मछली प्रजनन पर ज्ञान प्रदान करना और गंगा नदी में रेंचिग कार्यक्रम के तहत देशी मछली की आबादी को बढ़ाना"। इसका मुख्य था कार्यक्रम का उद्घाटन। श्री आई. उप्पल, एजीएम, एनटीपीसी फरक्का,मुख्य अतिथि के रूप में श्री एम. दासगुप्ता, मत्स्य विकास अधिकारी, मात्स्यिकी विभाग, मालदा विशिष्ट अतिथि के रूप में, श्री वी. वी. दिघीकर, टी ओ, आईसीएआर-सीआईएसएच, मालदा के प्रतिनिधि और वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। आईसीएआर-

सिफरी, बैरकपुर से डॉ. ए.के. साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक और परियोजना सह-अन्वेषक ने गणमान्य व्यक्तियों और किसानों का स्वागत किया और प्रशिक्षण के उद्देश्यों और गतिविधियों की योजना के बारे में जानकारी दी। एनटीपीसी के प्रतिनिधि श्री एस. प्रधान ने किसानों की आजीविका में सुधार के लिए एनटीपीसी के सीएसआर के तहत विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। श्री दिप्तीकर ने किसानों के कौशल विकास के लिए आईसीएआर-सीआईएसएच, केवीके, मालदा में आयोजित सुविधाओं और विभिन्न कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। श्री. दासगुप्ता ने वैज्ञानिक आधारित कृषि पद्धतियों को अपनाकर मछली लाभ की जानकारी प्रदान किया। श्री आई. उप्पल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभों को रेखांकित किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि किसानों को आजीविका में सुधार के लिए मछली पालन का लाभ उठाना चाहिए। डॉ. डी.के. मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और परियोजना सह-अन्वेषक ने परियोजना से जुड़े सभी प्रतिनिधियों, मछली किसानों और अनुसंधान विद्वानों को औपचारिक रूप से धन्यवाद दिया और डॉ. दीपक नायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी,ICAR-CISH, KVK, मालदा और डॉ. शैलेश कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (Fy. Sc) को उनकी गहरी रुचियों और समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में तालाब की तैयारी और नर्सरी तालाब प्रबंधन पर सिद्धांत कक्षाएं, ब्रूड

स्टॉक की पहचान, प्रेरित प्रजनन तकनीक, विभिन्न प्रकार की हैचरी के बारे में विवरण, हैचरी संचालन, और कार्प पालन के लिए फ़ीड और फीडिंग प्रबंधन सहित तकनीकी सत्र, इसके बाद उत्प्रेरण एजेंट के इंजेक्शन द्वारा कार्प प्रजनन का साइट पर प्रदर्शन किया गया। प्रयोगशाला में भ्रूण के विकास के विभिन्न चरणों का प्रदर्शन किया गया। एफआरपी कार्प हैचरी का दौरा किया गया, इसके बाद इसके विस्तृत संचालन और अंडे और स्पॉन संग्रह पर प्रदर्शन प्रदान किया गया। अद्रछेत्र के साइट पर प्राकृतिक भोजन का संग्रह और पहचान पर कार्यशाला आयोजित की गई। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले 35 पुरुषों और 39 महिलाओं सहित कुल 74 मछली किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया है। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. ए.के. साहू, डी.के. मीणा, और डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी और परियोजना अन्वेषक, एनटीपीसी की देखरेख में किया गया।

## भाकृअनुप-सिफरी ने "नमामि गंगे" कार्यक्रम के तहत कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की

डॉल्फ़िन एक स्वस्थ जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक संकेतक प्रजाति हैं। इसलिए, डॉल्फ़िन की रक्षा दोनों प्रजातियों और उन लोगों के अस्तित्व में योगदान देगी जो अपने जीवन के लिए जलीय आवास पर निर्भर हैं। सबसे अधिक आर्थिक रूप से मूल्यवान मछली होने के नाते, हिल्सा गंगा नदी के निचले हिस्सों में मछली पालन में महत्वपूर्ण योगदान देती है। हाल के शोध से संकेत मिलता है कि अत्यधिक मछली पकड़ने और अन्य मानवजनित गतिविधियों से गंगा नदी की हिल्सा और डॉल्फ़िन आबादी को गंभीर खतरा है। इन क्षेत्रों में, नमामि गंगे की प्रमुख पहलों के हिस्से के रूप में, संस्थान ने फरवरी 2023 में "डॉल्फ़िन और हिल्सा संरक्षण" पर जागरूकता कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की, ताकि नदी पर निर्भर मछुआरों को सामाजिक गतिविधियों सहित 250 से अधिक सक्रिय मछुआरों को जागरूक किया जा सके, और सप्ताह भर चलने वाले जागरूकता कार्यक्रमों के साथ गंगा नदी के निचले हिस्सों के किनारे रहने वाले छात्रों को डॉल्फ़िन और हिलसा संरक्षण के बारे में जागरूक किया जा रहा है। बजबज फेरी घाट, पुजाली फिश लैंडिंग साइट, बिरलापुर, और गोदाखली मत्स्य अवतरण स्थल (06.02.2023), बुरुल, रायचक, और फाल्टा मत्स्य अवतरण स्थल (07.02.2023), डायमंड हार्बर मत्स्य अवतरण स्थल (07.02.2023), पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। 08.02.2023), और त्यांगरा चार मत्स्य अवतरण स्थल (09.02.2023)। डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी और एनएमसीजी परियोजना के पीआई ने गंगा नदी में

डॉल्फ़िन और हिल्सा के संरक्षण के प्रयासों का नेतृत्व किया। डॉ. दास ने अपने संदेश में डॉल्फ़िन के बारे में लोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया क्योंकि वे भारत में कई कठिनाइयों का सामना करते हैं। गंगा नदी के निचले हिस्सों का उपयोग मानसून के मौसम (जून से मध्य अक्टूबर) और सर्दियों के मौसम (मध्य जनवरी से मध्य अप्रैल) में गिल जाल के साथ मूल्यवान मछली हिलसा को पकड़ने के लिए किया जाता है (जाल आकार 65-110 मिमी से लेकर) ). इस अत्यधिक व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजाति की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए, उन्होंने पहले, मछुआरों को 90 मिमी से छोटे गिल जाल का उपयोग करने से परहेज करने की सलाह दी, जैसा कि मत्स्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है

जागरूकता अभियान के दौरान

स्थानीय मछुआरों को विभिन्न नदी संरक्षण उपायों के बारे में बताया गया, जैसे कि नदी से सटे बागवानी और कृषि भूमि पर कीटनाशकों का उपयोग करने से बचना, किनारे के कटाव को रोकने के लिए नदी के किनारों पर वनों की कटाई, प्लास्टिक और अन्य कचरे को नदी में फेंकने से बचना, वैज्ञानिक मछली पकड़ने के गियर आदि का उपयोग करके नदी की जैव विविधता को बनाए रखना। इसके अतिरिक्त, 'डॉल्फ़िन और हिल्सा संरक्षण' पर फ़्लायर्स को मत्स्य पालन करने वालों और विभिन्न स्थानों में नदी के किनारे रहने वाले ग्रामीणों में गंगा नदी की मछलियों को दर्शाने वाले एक चित्रात्मक पोस्टर को वितरित किया गया। कार्यक्रम को नमामि गंगे टीम और पश्चिम बंगाल के राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों की मदद से एक साथ रखा गया था। इसका पर्यवेक्षण डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर द्वारा किया गया और संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. दिबाकर भक्त द्वारा समन्वयित किया गया।

# "नमामि गंगे" कार्यक्रम के तहत स्कूली छात्रों को शिक्षित करना: एक पहल

किसी भी देश की नींव उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। कल्पना और रचनात्मकता शुरुवात छात्रों के मन में उत्कंठा जगाकर की जाती है। 9 फरवरी, 2023 को, "नमामि गंगे" परियोजना के हिस्से के रूप में, आईसीएआर-सिफरी ने फ्रेजरगंज में लक्ष्मीपुर प्रवर्तक जूनियर हाई स्कूल के

छात्रों और नई एकीकृत सरकारी स्कूल कुलपी, के स्कूल शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया। एक पोस्टर प्रस्तुति की सहायता से, छात्रों को नदी की पारिस्थितिकी के लिए मछली और डॉल्फ़िन के मूल्य के बारे में जागरूक किया गया। उन्हें नदी में जहर देकर मछली पकड़ने, छोटे आकार के जाल के उपयोग से भविष्य के दुषपरिणामों और वर्तमान में गंगा को प्रदूषित करने वाली मानवजनित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गयी। उन्हें बताया गया कि गंगा नदी में मछली की प्रजातियों की संख्या 240 से घटकर 190 रह गई है, क्योंकि मानवजनित गतिविधियां हैं। युवा हिल्सा को पकड़ने और छोटे अकरो के जालों का उपयोग करने से परहेज करने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं, जो अंततः मछुआरों के परिवार की आजीविका कमाने की क्षमता को नुकसान पहुंचाते हैं। बच्चों को गंगा के पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और पुनर्स्थापन में गंगा की डॉल्फ़िन की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि गंगा की डॉल्फ़िन आमतौर पर स्थानीय लोगों और मछुआरों को चोट नहीं पहुँचाती हैं; बल्कि, वे लोगों के साथ बहुत अच्छे दोस्त बनाते हैं। छात्र हमें आगे बढ़ने के लिए मां गंगा और उसके नदी पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा पर बहुत उत्साहजनक प्रतिक्रिया देते हैं। जागरूकता बढ़ाने की इस पहल में लगभग 85 छात्रों, शिक्षकों और स्कूल के कर्मचारियों ने भाग लिया। लक्ष्मीपुर

प्रवर्तक जूनियर हाई स्कूल, फ्रेजरगंज के प्रभारी शिक्षक श्री शंकर मंडल के साथ-साथ दोनों स्कूलों के अन्य शिक्षकों और कर्मचारियों ने भारी सहायता और उपस्थिति प्रदान की, जिससे इंटरैक्टिव और जागरूकता कार्यक्रम सफल रहा। डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर, एनएमसीजी परियोजना टीम के सदस्यों और डॉ. दिबाकर भक्त, वैज्ञानिक के निर्देशन और पर्यवेक्षण में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

# सुंदरबन की महिलाओं को आजीविका बढ़ाने के लिए सजावटी मछली पालन का प्रशिक्षण

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी) के निदेशक, डॉ. बि.के. दास, के नेतृत्व में सुंदरवन के ग्रामीण संकटग्रस्त मछली किसानों को उनकी आजीविका को फिर से जीवंत करने के लिए विभिन्न तकनीकी इनपुट प्रदान करके अपना सहयोग दे रहा है। सजावटी मछली पालन ग्रामीण महिलाओं की घरेलू अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देने के लिए एक उद्यम है और भारतीय निर्यात और घरेलू बाजारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जैसा कि भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पीएमएसएसवाई के अंतर्गत सजावटी मछली पालन को प्राथमिकता दिया गया है । सजावटी मछली पालन के माध्यम से ग्रामीण समुदाय की आजीविका विकसित करने के मिशन के साथ 14 से 16 फरवरी, 2023 के दौरान कुलतली, सुंदरबन की 19 ग्रामीण महिलाओं के लिए आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में सजावटी मछली पालन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने उद्घाटन सत्र में कहा कि आजीविका के विकास के लिए सजावटी मछली पालन उद्योग को विकसित करने के लिए कुलतली, बसंती और सुंदरबन के लाभार्थियों के बीच सजावटी मछली पालन किट की 100 इकाइयां पहले वितरित की गई थीं। क्लस्टर आधार पर एक मिशन मोड अंतर्गत , जिसमें ग्रामीण महिलाओं ने सजावटी मछली की खेती शुरू की। सजावटी मछली पालन तकनीक के लिए प्रारंभिक कौशल प्रदान करने के लिए कुलतली में जन जागरूकता कार्यक्रम और साइट पर प्रदर्शन आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण व्यावहारिक प्रशिक्षण, क्लास रूम शिक्षण और एक्सपोजर विजिट के लिए डिजाइन किया गया है। एक्वेरियम का निर्माण, प्राकृतिक और कृत्रिम फीड तैयार करना, फीडिंग तकनीक, लाइवबीयरर्स की ब्रीडिंग तकनीक और अंडे की परतें सजावटी मछली, एक्वेरियम का रखरखाव और निगरानी जैसे कि पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, एरेटर और थर्मोस्टैट्स का उपयोग, संगत एक्वैरियम मछली प्रजातियों का चयन आदि के प्रशिक्षण में पढ़ाया गया। इसके अतिरिक्त, एक सजावटी मछली बाजार और कृषि इकाइयों के प्रदर्शन दौरे की भी व्यवस्था की गई। समापन सत्र में, बंगाली में लिखित सजावटी मछली पालन पर नियमावली प्रशिक्षुओं के बीच वितरित की गई। श्री सुजीत चौधरी, श्रीमती संगीता चक्रवर्ती और डॉ. श्रेया भट्टाचार्य के सहयोग से डॉ. लियानथुमलुआया, श्रीमती पी.आर. स्वैन और श्री गणेश चंद्र द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया गया।

# गंगा नदी में हिलसा मछली के संरक्षण और पुनर्स्थापन हेतु रैंचिंग : एक मिशन मोड दृष्टिकोण

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के तहत भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने 17 फरवरी 2023 को साहिबगंज (ओझा टोली घाट), झारखंड में एक रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें गंगा नदी में हिलसा मछली के 1,80,000 निषेचित अंडे और 3000 पोना मछलियों को छोड़ा गया। गंगा नदी में हिलसा मछली के निषेचित अंडे और पोना मछलियों की रैंचिंग का उद्देश्य लार्वा की उत्तम अतिजीविता और वयस्क मछलियों के बेहतर परिपक्वता तथा विकास के लिए प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करना है। संस्थान के अध्ययन के अनुसार, नियंत्रित परितंत्र में लार्वा का विकास एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसलिए कृत्रिम निषेचन के बाद निषेचित अंडों और पोना मछलियों को नदी के संरक्षित स्थल में छोड़ना गंगा और अन्य नदियों में मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण की दिशा में एक प्रभावी रणनीति साबित हो सकती है। इस अभिनव पद्धति को देश की अन्य नदीय परितंत्रों जैसे महानदी, गोदावरी और कावेरी में अपनाया जा सकता है।

इसी क्रम में सिफरी ने फरक्का में एक हिलसा रेंचिंग स्टेशन स्थापित किया है। इसके लिए, फरक्का में गंगा नदी से जंगली मत्स्य प्रजातियाँ के नर और मादा मछलियों को एकत्र किया गया तथा फरक्का हिलसा रेंचिंग स्टेशन में इनका कृत्रिम निषेचन किया गया। इन निषेचित अंडों को 26.1 डिग्री सेल्सियस तापमान पर ऊष्मायन किया गया था और इन्हे प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध प्लवक और कृत्रिम रूप से विकसित क्लोरेला खिलाया गया। सक्रिय रूप से तैरने वाले स्पॉन को ऑक्सीजन युक्त डब्बों में पैक करके साहिबगंज, झारखंड में ले जाया गया। इसके साथ ही, निषेचित अंडों को भी ऑक्सीजन युक्त डब्बों में भर कर सुबह-सुबह रैंचिंग स्थल पर ले जाया गया। साहेबगंज में गंगा नदी में उपयुक्त संरक्षित स्थलों पर इन निषेचित अंडे और स्पॉन को छोड़ा गया।

यह कार्यक्रम झारखंड पूर्वी गंगा मछुआरा सहकारी समिति लिमिटेड और मत्स्य पालन विभाग, झारखंड के सहयोग से आयोजित किया गया। इस अवसर पर सिफरी तथा उक्त संगठन/कार्यालय के प्रतिनिधियों और 50 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया और इस कार्यक्रम की भरपूर सराहना की। हिलसा स्पॉन और निषेचित अंडों का यह रेंचिंग कार्यक्रम नदी में न केवल देशी जर्मप्लाज्म को बढ़ाएगा बल्कि हिल्सा मछली को उसके मूल आवास स्थल अर्थात गंगा नदी के मध्य खंड में पुनरुत्थान में मदद करेगा जो फरक्का बैराज निर्माण के बाद प्रायः खतम हो चुका था। यह कार्यक्रम सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन तथा नमामि गंगे परियोजना के वैज्ञानिकों और अनुसंधान सहयोगियों द्वारा समन्वयित किया गया।

# भाकृअनुप-सिफरी द्वारा विकसित ईमत्स्य सॉफ्टवेयर का गुवाहाटी में प्रदर्शन किया गया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर और मत्स्य निदेशालय (डीओएफ),असम सरकार ने संयुक्त रूप से 21 फरवरी 2023 को निदेशालय, मीन भवन, गुवाहाटी में अंतर्स्थलीय मछली पकड़ने के डेटा के संग्रह के लिए आईसीएआर-सिफरी द्वारा विकसित ई मत्स्य ऐप पर एक प्रदर्शन-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी; डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख, भाकृअनुप-सिफरी, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र और श्री एन. के. देबनाथ, एसीएस, मत्स्य पालन निदेशक, असम उपस्थित थे और साथ ही असम मत्स्य विभाग के 47 अधिकारियों ने भाग लिया, जिसमें आईसीएआर-सिफरी गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मी और जिला मत्स्य अधिकारी शामिल थे। इसकी शुरुआत डॉ. आर. बर्मन, मिशन निदेशक, सीएमएसजीयूवाई, डीओएफ के स्वागत भाषण से हुई।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री राकेश कुमार, आयुक्त एवं सचिव (मत्स्य विभाग), असम सरकार द्वारा किया गया था। उन्होंने कहा कि आजकल सभी प्रमुख विकास परियोजनाएं डेटा-संचालित हैं और उन्होंने मोबाइल एप्लिकेशन के विकास के लिए आईसीएआर-सिफरी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने दोनों संगठनों से इन मत्स्य संसाधनों से वैज्ञानिक डेटा संग्रह में तकनीकी प्रगति सहित राज्य में ओपन वॉटर फिशरीज के विकास के लिए मिलकर काम करना जारी रखने का आग्रह किया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने प्रदर्शन कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में बताया। कार्यक्रम का उद्देश्य यह बताना था कि कैसे आधुनिक मोबाइल संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग एक इंटरनेट आधारित एप्लिकेशन - eMatysa (इलेक्ट्रॉनिक के लिए 'e' और संस्कृत भाषा में मत्स्य का अर्थ मछली) के साथ एक इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली के विकास के लिए किया जा सकता है - जिसके माध्यम से बहुत कम अतिरिक्त संसाधनों का उपयोग करके अंतर्स्थलीय खुले जल निकायों से मछली पकड़ने के डेटा को तुरंत एकत्र किया जा सकता है। कार्यक्रम के प्रदर्शन से पहले भारत के तीन राज्यों कर्नाटक, तमिलनाडु और झारखंड के चयनित जलाशयों में इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक परीक्षण-कार्यान्वयन किया गया था। डॉ. एम. कार्तिकेयन, वैज्ञानिक (एसजी), भाकृअनुप-सिफरी, बैंगलोर केंद्र ने प्रतिभागियों को ईमत्स्य पर प्रशिक्षित किया और उन्हें एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर से परिचित कराने के लिए डेमो दिया। उन्होंने बताया कि अंतर्स्थलीय जल निकाय से कोई भी मान्यता प्राप्त व्यक्ति (जिसका यूजर आईडी और पासवर्ड सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा बनाया गया है और उस व्यक्ति को दिया गया है) इस ऐप का उपयोग कर मोबाइल फोन के माध्यम से दैनिक आधार पर मछली पकड़ने का डेटा सीधे सर्वर को भेज सकता है । इस ऐप का उपयोग करने वाले मान्यता प्राप्त व्यक्तियों द्वारा भेजा गया डेटा वेब सर्वर में डेटाबेस में भर जाएगा। कस्टमाइज्ड वेब-एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का उपयोग परिणामी डेटाबेस के प्रबंधन और बाद में रिपोर्ट जेनरेशन के लिए किया जाता है। रिकॉर्ड किए गए डेटा को आगे के विश्लेषण के लिए वेबसाइट से एक्सेल फॉर्मेट में डाउनलोड किया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक आईसीएआर-सिफरी के साथ-साथ डॉ. आर. सी. बर्मन, डीओएफ, असम द्वारा किया गया था।

# प्रयागराज में आईसीएआर-सिफरी और एनजीबी (डीयू) द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

आईसीएआर-सिफरी और एनजीबी (डीयू), प्रयागराज उत्तर प्रदेश द्वारा संयुक्त रूप से 25 से 26 फरवरी, 2023 तक "गंगा बेसिन (नीड-2023) के विशेष संदर्भ में पारिस्थितिकी बनाम आर्थिक विकास" पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी। संगोष्ठी पर ध्यान केंद्रित किया गया था। गंगा नदी की जलीय जैव विविधता के बारे में जागरूकता जो मछली किसानों की अर्थव्यवस्था से सीधे संबंधित है। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. धर्म नाथ झा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं केन्द्राध्यक्ष के स्वागत भाषण से हुई। प्रो. आर.एस. वर्मा, निदेशक, एमएनआईटी और आईआईआईटी, प्रयागराज इस अवसर के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने आणविक जीव विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला और उस क्षेत्र में अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य लोगों में डॉ. एस.सी. तिवारी, प्रो वाइस चांसलर, एनजीबी (डीयू) से बीएआरसी परियोजना के साथ गंगा नदी में नेहरू ग्राम भारती के काम के बारे में बात की गई और डॉ. दिलीप कुमार, सलाहकार (एफएओ) और पूर्व कुलपति डॉ. आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई ने

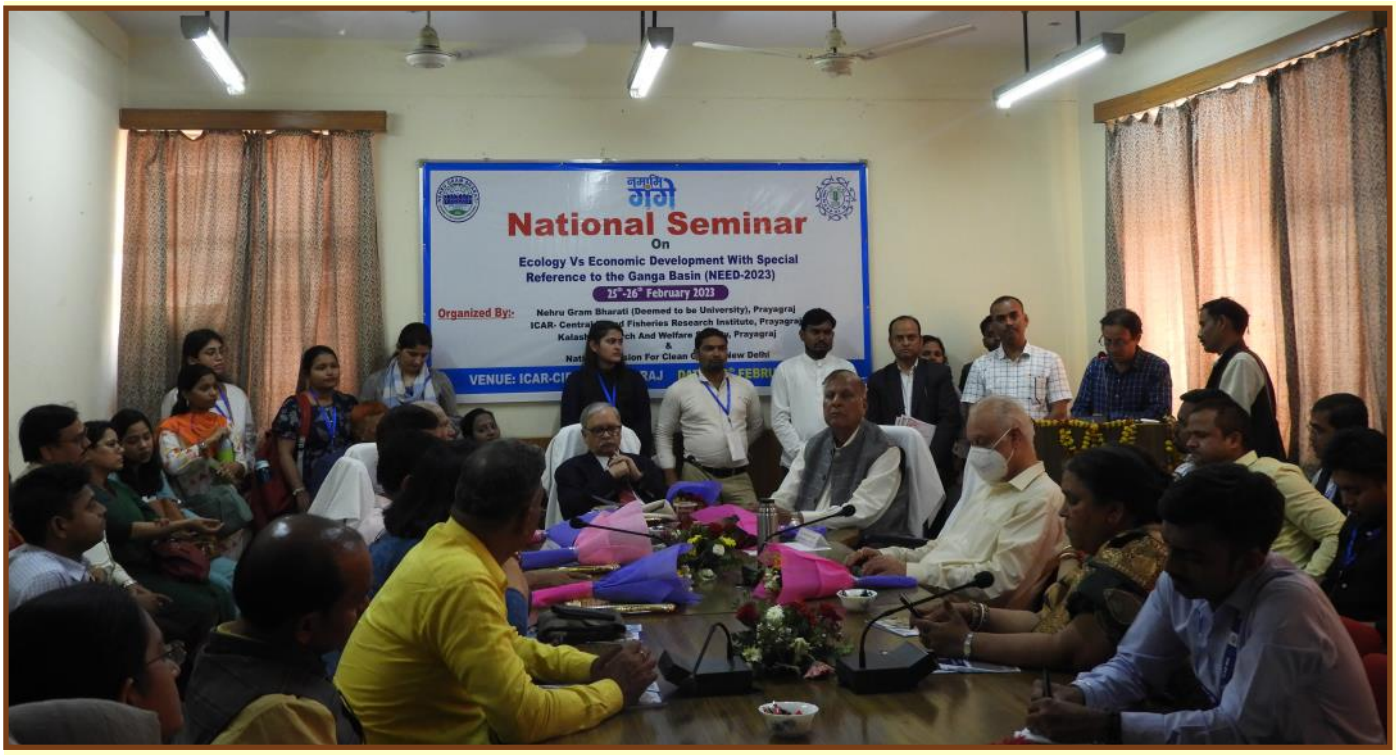


उन्होंने बताया कि संगोष्ठी के लिए तय किया गया विषय बहुत महत्वपूर्ण और अनूठा है और संगोष्ठी में समग्र संतुष्टि व्यक्त की। डॉ. के.डी. जोशी, आईसीएआर-सिफरी के पूर्व प्रमुख, प्रो. पी. नौटियाल ने भी संगोष्ठी के बारे में अपने विचार साझा किए।

संगोष्ठी के दौरान, कई प्रतिभागियों द्वारा कुल 141 मौखिक और पोस्टर प्रस्तुतियों के माध्यम से "पारिस्थितिकी बनाम आर्थिक विकास" के विभिन्न पहलुओं में गहन ज्ञान प्रदान किया गया। डॉ. ए. आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप-सिफरी, प्रयागराज द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

# सिफरी द्वारा दस हजार मछलियों को संरक्षण के लिए गंगा नदी में छोड़ा गया

गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा आज दिनांक 26 फरवरी 2023 को, पवित्र पावन गंगा और यमुना के संगम तट पर गंगा नदी में 10000 (दस हजार) भारतीय प्रमुख कार्प-कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ॰ बि॰ के॰ दास, ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया।उन्होने कहा पुरे गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग होगा । डॉ॰ संदीप बेहेरा, वरिष्ठ सलाहकार, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिषन ने नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ॰ दिलीप कुमार, सलाहकार (एफ ए ओ) एवम पूर्व निदेशक(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्—केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान) ने मानव सभ्यता के लिए गंगा के महत्व को बताया और गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए उपस्थित लोगो से आह्वान किया। इस अवसर पर कुछ जरूरतमन्द मछुआरों को जाल दिया गया और सभी ने गंगा के प्रति जागरूक होने के साथ ही गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अन्त में संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डा॰ डी एन झा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आस्वस्त किया कि समाज के भगीदारी से हम इस परियोजना के उद्देष्यों को पाने में सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों ने भाग लिया और सभा को सम्बोधित किया।

## मुख्य शोध उपलब्धियां

- अरुणाचल प्रदेश के कामेंग बेसिन में दिरांग नदी की पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी के आकलन संबंधी सर्वेक्षण से पता चला है कि इन जलक्षेत्र में स्थानीय मछली प्रजातियों की बहुलता हैं जिसमें स्नोट्राउट का प्रभुत्व 80-90 प्रतिशत दर्ज किया गया।
- कावेरी नदी के विस्तार स्थलों, भवानी और ग्रांड एनीकट के मछली के नमूनों में उभरते प्रदूषक, थैलेट एस्टर अर्थात डायथाइल थैलेट (0.048-0.818 µg/g) और डाइइथाइल हेक्साइल थैलेट (0.033-0.39 µg/g) संचित पाए गए। पर इन प्रदूषकों का स्तर अनुशंसित न्यूनतम जोखिम स्तर के अनुसार कम पाए गए जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं हैं।
- जनवरी 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 4.129 टन था, जो जनवरी 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में 26.67 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।
- गंगा नदी के संरक्षण और पुनर्स्थापन के लिए 17 और 21 फरवरी 2023 को झारखंड के दो स्थानों पर 3.8 लाख से अधिक निषेचित अंडे और 5,000 हिलसा स्पॉन गंगा नदी के ऊपरी क्षेत्र में छोड़े गए।

### बैठकें

- विश्व आर्द्रभूमि दिवस (WWD) 2023 पर दिनांक 2 फरवरी, 2023 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में आयोजित 'आर्द्रभूमि के सतत मत्स्य प्रबंधन' पर विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। इसमें कुल 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- दिनांक 5 फरवरी को सुखिया ब्लॉक, दार्जिलिंग में सजावटी मछली पालन पर जागरूकता हेतु इसके लाइव प्रदर्शन आयोजित किया गया, जिसमें अनुसूचित जाति समुदाय के 50 लाभार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सजावटी मत्स्य पालन किट भी वितरित की गई।
- मिरिक उपमंडल, दार्जिलिंग में दिनांक 5 फरवरी 2023 को सजावटी मछली पालन के जागरूकता-सह-प्रदर्शन कार्यक्रम में किट और इनपुट वितरण किया गया जिसमें अनुसूचित जाति समुदाय के 40 लाभार्थी शामिल हुए।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 13-17 फरवरी 2023 को “मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियों में नवाचार” विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया। यह संगोष्ठी मत्स्य पालन विभाग के सहयोग से सतत और लचीली मत्स्य पालन के लिए आईसीईएस/एफएओ वर्किंग ग्रुप ऑन फिशिंग टेक्नोलॉजी एंड फिश विहेवियर (डब्ल्यूजीएफटीएफबी23) द्वारा आयोजित किया गया था। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने दिनांक 16 फरवरी 2023 को "फ्यूचर प्रूफिंग स्मॉल-स्केल फिशरीज थीम के तहत लघु-स्तरीय मत्स्य पालन के योगदान हेतु अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में नवाचार" पर प्रस्तुति दी।
- दिनांक 14-16 फरवरी 2023 को संस्थान ने कुलतली, सुंदरवन, पश्चिम बंगाल की 19 महिलाओं के लिए "रोजगार सृजन और आजीविका वृद्धि के लिए अंतर्स्थलीय खुले जल सजावटी मछली पालन के अवसर" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिकों ने दिनांक 20 फरवरी, 2023 को भारतीय कृषि अनुसंधान द्वारा आयोजित "एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड की वर्तमान स्थिति और भावी योजना" पर वर्चुअल बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 20-22 फरवरी 2023 को कोच्चि में वन हेल्थ एक्वाकल्चर, सीईएफएएस, यूके द्वारा आयोजित "एक सुरक्षित और टिकाऊ जलीय खाद्य आपूर्ति हेतु नवीन तकनीक" पर इंटरएक्टिव हाइब्रिड कार्यशाला में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 22-24 फरवरी, 2023 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (जीएडीवीएएसयू), लुधियाना तथा पंजाब इंडियन इकोलॉजिकल सोसाइटी (IES) के सहयोग से आयोजित "मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर-एक पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य" (IESFAC-2023) पर सम्मेलन में भाग लिया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने "अंतर्स्थलीय जलीय संसाधनों के सतत आर्थिक उपयोग के लिए पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण" पर एक प्रस्तुति दी।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 24-26 फरवरी 2023 को "पशु विज्ञान अनुसंधान और सामाजिक परिवर्तन में तकनीकी नवाचार" पर संयुक्त रूप से विभाग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। यह सम्मेलन प्राणी विज्ञान विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय और उड़ीसा की जूलॉजिकल सोसायटी, भुवनेश्वर द्वारा संयुक्त तौर पर आयोजित की गयी।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 25-26 फरवरी, 2023 को "गंगा बेसिन के विशेष संदर्भ में पारिस्थितिकी बनाम आर्थिक विकास (नीड-2023)" पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया, जिसे संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज और नेहरू ग्राम विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश ने संयुक्त रूप से किया गया ।
- संस्थान ने दिनांक 14-20 फरवरी, 2023 के दौरान बिहार के सारण जिले के किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मत्स्य विभाग, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।

### विविध

- संस्थान ने दिनांक 21-23 फरवरी, 2023 के दौरान हारोआ ब्लॉक, उत्तर 24 परगना के मछली किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर नाबार्ड प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 25 मछली किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 21-23 फरवरी, 2023 के दौरान पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के चौथे वर्ष के स्नातक छात्रों के लिए मत्स्य कार्य अनुभव कार्यक्रम के तहत एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 32 छात्रों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 21 फरवरी, 2023 को तमिलनाडू डा. जे. जयललिता मात्स्यिकी विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के स्नातक

(बी.एफ.एससी) छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें 42 छात्रों को संस्थान में उपलब्ध विभिन्न अनुसंधान सुविधाओं और गतिविधियों को बताया गया है।

- संस्थान ने दिनांक 18-20 फरवरी, 2023 के दौरान आरपीसीएयू कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी द्वारा पिपराकोठी, पूर्वी चंपारण, बिहार में आयोजित पशु संरक्षण, उद्यान प्रदर्शनी एवं आत्मनिर्भर कृषि महोत्सव 2023 में भाग लिया।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

## नेहरू ग्राम भारती एवं आईसीएआर- सिफरी की राष्ट्रीय संगोष्ठी 25-26 फरवरी को

प्रयागराज नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय प्रयागराज और आईसीएआर- केंद्रीय अंतर स्थली मात्स्यकी संस्थान प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 25 से 26 फरवरी 2023 को फ्रपारिस्थितिकी बनाम आर्थिक विकास गंगा बेसिन के विशेष संदर्भ मेंफ्र फ्रश्वष्भ्द्य्शद्द4 Vs. Economics Development with special reference to the Ganga Basin (NEED-2023)फ्र का आयोजन किया जा रहा है संगोष्ठी के सचिव डॉ आशीष शिवम तथा डॉक्टर डीएन झा ने बताया की भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों उत्तराखंड, बिहार, आसाम, गुजरात, त्रिपुरा, जम्मू एंड कश्मीर, महाराष्ट्र, उड़ीसा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश से 150 से भी ज्यादा शोध पत्रों का वाचन किया जाएगा तथा इसमें प्राप्त रिकमेंडेशंस को भारत सरकार पर्यावरण मंत्रालय एवं गंगा मंत्रालय को भेज भेजा जाएगा द्य यह कार्यक्रम प्रथम दिन नेहरू ग्राम भारती के शशि परिसर में तथा द्वितीय दिन आईसीएआर -सिफरी के परिसर में आयोजित किया जाएगा।

## नेहरू ग्राम भारती सिफरी की राष्ट्रीय संगोष्ठी 25 से

जासं, प्रयागराज : नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय प्रयागराज और आइसीएआर-केंद्रीय अंतरस्थली मात्स्यिकी संस्थान सिफरी के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी 25 से 26 फरवरी तक होगी। पारिस्थितिकी बनाम आर्थिक विकास गंगा बेसि... विशेष संदर्भ में विषय पर आधारि... इस संगोष्ठी के सचिव डा. आ... शिवम तथा डा. डीएन झा ... कि भारतवर्ष के विभि... उत्तराखंड, बिहार, गुजरात, त्रिपु... जम्मू एंड कश्मीर, महाराष्ट्र, उड़ी... दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश से 150 ... ज्यादा शोध पत्रों का वाचन कि... जाएगा और इसकी संस्तुतियों ... भारत सरकार पर्यावरण मंत्राल...

## Brainstorming on wetland management held

STAFF REPORTER

GUWAHATI, Feb 3: ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore organized brainstorming session on sustainable fisheries management of wetlands' at the ICAR-CIFRI Regional Centre on February 2 on the occasion of World Wetlands Day (WWD).

for collaboration between different agencies for sustainable development of beels and wetlands. Dr BK Bhattacharjya, Head, ICAR-CIFRI Regional Centre, Guwahati, flagged the major issues concerning conservation and sustainable utilization of floodplain wetland fisheries.

Stakeholders from various organizations concerned namely Departments of Fisheries,

■ RNP/GH/075/2021-2023 ■ REGN. NO. 53902/95
■ Vol. 28 ■ No. 328, FRIDAY
■ e-paper : www.asomiyapratidin.in

# অসমীয়া প্ৰতিদিন

## 'আৰ্দ্ৰভূমি মীনক্ষেত্ৰ... পৰিচালনা' শীৰ্ষক...

গুৱাহাটী, ২ ফেব্ৰুৱাৰী ঃ ভাৰতীয় কৃষি গৱেষণা...
কেন্দ্ৰীয় অন্তৰ্দেশীয় মীনক্ষেত্ৰ গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠা...
কেন্দ্ৰই আজি 'বিশ্ব আৰ্দ্ৰভূমি দিৱস-২০২৩' উ...
বহনক্ষম পৰিচালনা' শীৰ্ষক এক বিবেক মন্থন...
উক্ত কাৰ্যসূচীত অসম মীন বিভাগকে ধৰি পশ্চিমব...
লগতে অসম মীন উন্নয়ন নিগম, মীন মহাবি...
আৰ্দ্ৰভূমি প্ৰাধিকৰণ, গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, ৰাষ্ট্ৰ...
চৰকাৰৰ পৰিবেশ আৰু বন বিভাগ, অসম কৃষি ব...
প্ৰকল্প, বৰ্ল্ড ফিছ, আৰণ্যক (বেচৰকাৰী সংস্থা)...
সমন্বিতে ৰাজ্যখনৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ মাছমৰীয়া আৰু...
কৰে। কলকাতাৰ বেৰেকপুৰস্থিত কেন্দ্ৰীয় অ...
প্ৰতিষ্ঠানৰ সঞ্চালক ড° বসন্ত কুমাৰ দাসে প্ৰতি...
(বিল)সমূহৰ ওপৰত কৰি অহা গৱেষণামূলক কাম...
কৰি এইসমূহৰ সংৰক্ষণৰ ওপৰত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভ...
বিভাগৰ আয়ুক্ত-সচিব ৰাকেশ কুমাৰে অনুষ্ঠান...
উৎপাদনৰ ক্ষেত্ৰত বিলসমূহৰ অৱদান তথা ইয়াৰ...
জীৱন ধাৰণৰ মান উন্নীতকৰণৰ ওপৰত গুৰুত্ব...
গুৱাহাটীস্থিত আঞ্চলিক কেন্দ্ৰৰ প্ৰধান বিজ্ঞানী ...
ভট্টাচাৰ্যই বিলসমূহৰ সংৰক্ষণ তথা ইয়াৰ উচিত...
কৰি বিলসমূহ সংৰক্ষণৰ লগত জড়িত সমস্যাবা...
দিক্‌নিৰ্ণায়ক ভাষণ আগবঢ়ায়। অসম মীন উন্নয়...
সঞ্চালক পি বৰকাকতিয়ে নিগমৰ অধীনৰ বিলস...
ধৰি বিলসমূহ উচিত ব্যৱহাৰৰ ওপৰত দৃষ্টি আ...

## सिफरी की राष्ट्रीय संगोष्ठी कल से

प्रयागराज। नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय प्रयागराज और आईसीएआर- केंद्रीय अंतर स्थली मात्स्यकी संस्थान प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 25 से 26 फरवरी को होगी। डॉ. आशीष शिवम तथा डॉ.र डीएन झा ने बताया 150 से भी ज्यादा शोध पत्रों का वाचन किया जाएगा।

## ICAR-CIFRI released Ten thousand fishes in the river Ganga for conservation

*JEEVAN EXPRESS NEWS*

PRAYAGRAJ: For conservation and restoration of fishes of the Ganga river 10,000 (Ten thousand) important fish fingerlings were released into the Ganga river at Sangam Nose, Prayagraj by ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute on Monday. Advance size fingerlings of Indian Major Carp viz. Catla, Rohu, and Mrigal fishes were ranched in the presence of Dr. Dilip Kumar, Advisor (FAO), and Dr. Sandeep Behera Senior Consultant Biodiversity, NMCG, New Delhi in a ranching program.

The event was organized under the National Mission for Clean Ganga (NMCG) project. Dr. B.K. D, Director of the institute informed the audience about the river Ganga and fishes of river and its importance. The chief guest of the occasion, Dr. Dilip Kumar, while addressing the function, explained the importance of the river Ganga for human civilisation and called for keeping it clean. Dr. Sandeep



Behera, briefed about the importance of Namami Gange programme for Ganga river. On this occasion, Prof. S. K. Srivastava, Vice Chancellor, NGB (DU) urged to save the Ganga River. Some cast nets were distributed among the fishermen residing on the bank of Ganga and Yamuna River.

The program was attended by the pilgrims, students, fishermen from nearby villages, fish traders, and local people living on the banks of Ganga. At the end of the program, Dr. Dharm Nath Jha, Senior Scientist and head of the Centre proposed vote of thanks. Other Scientists, officers, research scholars, etc. participated in the program and addressed the gathering.


## प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।



भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in


ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है